हिंदी साहित्य परिषद

2022 -2023

दिनांक- 31/8/2022

अंतर विभागीय व्याख्यान- महिला साहित्य और स्त्री आंदोलन

वक्ता- सुश्री शाश्वती (असिस्टेंट प्रोफेसर ,माता सुंदरी कॉलेज फॉर वूमेन)

स्थान- कक्ष संख्या -129

समय- दोपहर 1:00 बजे

महिला साहित्य और स्त्री आंदोलन एक दूसरे से जुड़े हुए हैं तथा साहित्य के क्षेत्र में महिलाओं को चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। नारीवादी चित्रण में लिखना एक प्रकार का विरोध माना जाता था। महिला साहित्यकारों की रचनाओं को टटोलना जरूरी है तथा इतिहास में छुपी महिला साहित्यकारों को समझना जरूरी है जिसके लिए हमें महिला आंदोलनों को समझना होगा। नारीवाद को लेकर विभिन्न बातें और तर्क सामने आते है हमारे रोज़मर्रा के जीवन में चाहे वह पहनावा हो या रहन-सहन हो। नारी वादी का उदय सोलहवीं सदी में पश्चिमी यूरोप से हुआ था तथा इसमें नारीवादी के अनेक रंग देखने को मिले। नारीवादी आंदोलन समय के साथ गहराई तक पहुंचा है। भारत में समाज सुधारक आंदोलनों के अंतर्गत महिला आंदोलनों का नेतृत्व पुरुषों ने किया। जैसे-ज्योतिबा फुले, राजा राम मोहन रॉय, आदि। समाज सुधारक आंदोलन का मूल भाव था कि महिलाओं को पूर्ण रूप से स्वतंत्रता प्राप्त करना तथा औपनिवेशिक शासकों को दिखाना चाहते थे कि भारत की महिलाएं पिछड़ी नहीं है। अंत में डॉ.लक्ष्मी जी के द्वारा एक कविता के माध्यम से स्त्रियों की स्थितियों पर चर्चा की गई।

व्याख्यान के दौरान ली गई तस्वीरें-